اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

वलिय्युल्लाह की पहचान

येह रिसाला **(वलिय्युल्लाह की पहचान)**

दा'वते इस्लामी की मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)'' ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबिय्यत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़ियात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े

www.dawateislami.net

के साथ "**मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत**" के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है । इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा ।

पेशे नज़र रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है ।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

15 रबीउ़ल आख़िर 1436 सि.हि.

05 फ़रवरी 2015 सि.ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

वलिय्युल्लाह की पहचान

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (37 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल, मह़बूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने मुझ पर दिन में एक हज़ार मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा, वोह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपना ठिकाना न देख ले ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

विलायत किसे कहते हैं ?

अ़र्ज़ : विलायत किसे कहते हैं ? नीज़ क्या इबादत व रियाज़त से विलायत ह़ासिल की जा सकती है ?

इर्शाद : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1360 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे

---

1 ..... اَلتَّرْغِيْب وَالتَّرْهِيْب، كتاب الذكر والدعاء، الترغيب فى إكثار الصلاة...الخ، ٢/٣٢٦، حديث: ٢٥٩١

www.dawateislami.net

शरीअ़त (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 264 पर है : विलायत एक क़ुर्बे ख़ास है कि मौला عَزَّوَجَلَّ अपने बरगुज़ीदा बन्दों को महूज़ अपने फ़ज़्लो करम से अ़त़ा फ़रमाता है। विलायत वह्बी शै है (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़त़ा कर्दा इन्आ़म है), न येह कि आ'माले शाक़्क़ा (सख़्त मुश्किल आ'माल) से आदमी ख़ुद ह़ासिल कर ले, अलबत्ता ग़ालिबन आ'माले ह़-सना इस अ़त़िय्यए इलाही के लिये ज़रीआ़ होते हैं और बा'ज़ों को इब्तिदाअन मिल जाती है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : विलायत कस्बी नहीं महूज़ अ़त़ाई है, हां ! (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : हम) कोशिश और मुजा-हदा करने वालों को अपनी राह दिखाते हैं।[1] जैसा कि पारह 21, **सू-रतुल अ़न्कबूत** की आयत नम्बर 69 में इर्शाद होता है : ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।

वलियुल्लाह किसे कहते हैं ?

अ़र्ज़ : वलिय्युल्लाह किसे कहते हैं ?

इर्शाद : उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने अपने अपने अन्दाज़ में वलिय्युल्लाह की मुख़्तलिफ़ ता'रीफ़ात बयान फ़रमाई हैं

---

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 606

www.dawateislami.net

इन में से चन्द ता'रीफ़ात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

साह़िबे तफ़्सीरे ख़ाज़िन ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद बग़्दादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : वलिय्युल्लाह वोह है जो फ़राइज़ से क़ुर्बे इलाही ह़ासिल करे और इत़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल रहे और उस का दिल नूरे जलाले इलाही की मा'रिफ़त में मुस्तग़रक़ (डूबा हुवा) हो। जब देखे दलाइले क़ुदरते इलाही को देखे और जब सुने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की सना ही के साथ बोले और जब ह़-र-कत करे त़ाअ़ते इलाही में करे और जब कोशिश करे उसी अम्र में कोशिश करे जो ज़रीअ़ए क़ुर्बे इलाही हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल से ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सिवा ग़ैर को न देखे, येह सिफ़त औलिया की है। बन्दा जब इस ह़ाल पर पहुंचता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का वली व नासिर और मुईनो मददगार होता है।[1]

मु-तकल्लिमीन कहते हैं : वली वोह है जो ए'तिक़ादे सह़ीह़ मब्नी बर दलील रखता हो और आ'माले सालिह़ा शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बजा लाता हो।[2]

बा'ज़ आरिफ़ीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن ने फ़रमाया : विलायत नाम है क़ुर्बे इलाही और हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ मश्ग़ूल रहने का, जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो

مدینہ

1 ..... تفسیرِ خازن، پ۱۱، یونس، تحت الآیۃ ۶۲، ۲/۳۲۲

2 ..... تفسیرِ کبیر، پ۱۱، یونس، تحت الآیۃ ۶۲، ۶/۲۷۶

www.dawateislami.net

उस को किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं रहता और न किसी शै के फ़ौत (ज़ाएअ़) होने का ग़म होता है ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि जनाबे रह़मते आ़-लमिय्यान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : औलियाउल्लाह वोह हैं जिन को देखने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ैद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : वली वोह है जिस में वोह सिफ़त हो जो इस आयत में मज़्कूर है : ﴿ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴾ (پ۱۱، یونس:۶۳) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ''वोह जो ईमान लाए और परहेज़ गारी करते हैं ।'' या'नी वली वोह है जो ईमान व तक़्वा दोनों का जामेअ़ हो ।[3]

बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया : वली वोह हैं जो ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करें । औलिया की येह सिफ़त अह़ादीसे कसीरा[4] में वारिद हुई है । **बा'ज़** अकाबिरीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن ने फ़रमाया : वली वोह हैं जो त़ाअ़त (या'नी इबादत) से क़ुर्बे इलाही की त़लब करते हैं और **अल्लाह** तआ़ला करामत से उन की कारसाज़ी

مدینہ

1 ..... تفسیر خازن، پ۱۱، یونس، تحت الآیۃ ۶۲، ۲/۳۲۳

2 ..... جامع صغیر، حرف الھمزۃ، ص۱۶۷، حدیث: ۲۸۰۱

3 ..... تفسیر خازن، پ۱۱، یونس، تحت الآیۃ ۶۲، ۲/۳۲۲

4 ..... ابوداود، کتاب الاجارۃ، باب فی الرھن، ۳/۴۰۲، حدیث: ۳۵۲۷

www.dawateislami.net

फ़रमाता है या वोह जिन की हिदायत का बुरहान के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कफ़ील हो और उस का हक़्क़े बन्दगी अदा करने और उस की ख़ल्क़ पर रह़ूम करने के लिये वक़्फ़ हो गए।

औलिया की मुन-द-र-जए बाला ता'रीफ़ात नक़्ल करने के बा'द सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : येह मा'ना और इ़बारात अगर्चे जुदागाना हैं लेकिन इन में इख़्तिलाफ़ कुछ भी नहीं है क्यूं कि हर एक इ़बारत में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है। जिसे क़ुर्बे इलाही ह़ासिल होता है येह तमाम सिफ़ात उस में होती हैं, विलायत के द-रजे और मरातिब में हर एक ब क़दर अपने द-रजे के फ़ज़्लो शरफ़ रखता है।[1]

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की पहचान

अ़र्ज़ : वलिय्युल्लाह की पहचान कैसे हो सकती है ?

इर्शाद : वलिय्युल्लाह की पहचान ह़क़ीक़तन बहुत मुश्किल है। मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़क़ीक़त येह है कि वलिय्युल्लाह की पहचान बहुत मुश्किल है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِى फ़रमाते हैं : औलियाउल्लाह

---

1 ..... ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 11, यूनुस, तह़्तल आयह : 62, स. 405

www.dawateislami.net

रह़मते इलाही की दुल्हन हैं जहां तक सिवाए इस के मह़रम के किसी की रसाई नहीं ।[1] इसी लिये कहा गया : وَلِی رَا وَلِی مِی شَناسَد या'नी वली की पहचान वली ही कर सकता है । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ख़ुदा की पहचान आसान है मगर वली की पहचान मश्किल क्यूं कि रब عَزَّوَجَلَّ अपनी ज़ात व सिफ़ात में मख़्लूक़ से आ'ला व बाला है और हर मख़्लूक़ इस पर गवाह मगर वली शक्लो सूरत, आ'माल व अफ़्आ़ल में बिल्कुल हमारी त़रह़ ।[2]

शरीअ़त में इज़्हार है और त़रीक़त में इख़्फ़ा (छुपाना), मकान की ज़ीनत दरवाज़े पर रखी जाती है और मोती कोठड़ी में ।[3]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : कितने ही परेशान ह़ाल, परागन्दा बालों और फटे पुराने कपड़ों वाले ऐसे हैं कि जिन की कोई परवाह नहीं करता लेकिन अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर किसी बात की क़सम खा लें तो वोह ज़रूर उसे पूरा फ़रमा दे ।[4]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! वली होने के

---

1 ..... روح البیان، پ۱۱، یونس، تحت الآیة ۶۳، ۴/ ۶۰

2 ..... روح البیان، پ۱۱، یونس، تحت الآیة ۶۳، ۴/ ۶۰

3 ..... शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 298

4 ..... ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب البَرَاءِ بْنِ مالک، ۵/ ۴۵۹، حدیث: ۳۸۸۰، ماخوذاً

www.dawateislami.net

लिये तश्हीर व इश्तिहार, नुमायां जुब्बा व दस्तार और अ़क़ीदत मन्दों की लम्बी क़ितार होना ज़रूरी नहीं जिस से इन की विलायत की मा'रिफ़त और शोहरत हो बल्कि आ़म बन्दों में भी वलिय्युल्लाह होते हैं लिहाज़ा हमें हर नेक बन्दे का अ-दबो एह़तिराम करना चाहिये कि न जाने कौन गुदड़ी का ला'ल (या'नी छुपा वली) हो जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखा है : **(1)** अपनी नाराज़ी को अपनी ना फ़रमानी में **(2)** अपनी रिज़ा को अपनी इत़ाअ़त में और **(3)** अपने औलिया को अपने बन्दों में । पस किसी भी गुनाह को छोटा नहीं समझना चाहिये कि हो सकता है उसी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी पोशीदा हो और किसी नेकी को छोटा नहीं समझना चाहिये हो सकता है कि उसी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा मन्दी हो और बन्दों में से किसी को भी ह़क़ीर नहीं समझना चाहिये हो सकता है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया में से कोई वली हो ।[1]

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मुख़्तलिफ़ मरातिब

अ़र्ज़ : क्या सब औलिया के मरातिब यक्सां होते हैं ? नीज़ इन में एक जैसी ही सिफ़ात पाई जाती हैं ?

مدینہ

1 ...... الزھد الکبیر، ص۲۹۰، رقم:۷۵۹

www.dawateislami.net

इर्शाद : औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मर्तबे मुख़्तलिफ़ हैं और येह ह़ज़रात मुख़्तलिफ़ अम्बिया के मज़्हर हैं, इस लिये इन की शानें जुदागाना हैं, सब में एक (ही त़रह़ की) अ़लामत तलाश करना ग़-लत़ी है । जिस त़रह़ एक हुकूमत के मुख़्तलिफ़ महकमे हैं, हर महकमे की वर्दी, पगड़ी अला-ह़दा, पोलिस की वर्दी और, फ़ौज की वर्दी कुछ और, रेल्वे की दूसरी, सब में एक ही अ़लामत तलाश नहीं की जा सकती । येही वज्ह है कि क़ुरआन व ह़दीस में इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की मुख़्तलिफ़ अ़लामतें इर्शाद हुई हैं ।[1]

अलबत्ता ईमान और तक़्वा ऐसी सिफ़ात हैं जो हर वलिय्युल्लाह के लिये शराइत़ की ह़ैसिय्यत रखती हैं लिहाज़ा कोई बे दीन या फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स वलिय्युल्लाह नहीं हो सकता । क़ुरआने करीम ने इन दोनों सिफ़ात को बयान फ़रमाया है चुनान्चे पारह 11 **सूरए यूनुस** की आयत नम्बर 62 और 63 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म । वोह जो ईमान लाए और परहेज़ गारी करते हैं ।

1..... शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 301, मुख़्तसरन

www.dawateislami.net

पारह 9 **सू-रतुल अन्फ़ाल** की आयत नम्बर 34 में इर्शाद होता है :

اِنْ اَوْلِیَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस के औलिया तो परहेज़ गार ही हैं।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : कोई काफ़िर या फ़ासिक़ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का वली नहीं हो सकता। विलायते इलाही ईमान व तक़्वा से मुयस्सर होती है।[1]

फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी किसी क़ौम के साथ ख़ास नहीं

अ़र्ज़ : क्या औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام मुसल्मानों के किसी ख़ास ख़ानदान या क़ौम से तअ़ल्लुक़ रखते हैं या किसी भी त़बक़े से हो सकते हैं।

इर्शाद : औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का किसी मख़्सूस ख़ानदान या नस्ल से होना ज़रूरी नहीं कि फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी किसी नस्ल या क़ौम ही के साथ ख़ास नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है अपनी रह़मत से नवाज़ देता है। येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या मुसल्मानों की हर क़ौम और हर पेशा करने वालों में होते रहे और क़ियामत तक होते रहेंगे, कभी मज़्दूर के भेस में, कभी सब्ज़ी और फल फ़रोश की सूरत में, कभी ताजिर या मुलाज़िम की शक्ल में, कभी चोकीदार

1.... तफ़्सीरे नई़मी, पारह : 9, अल अन्फ़ाल, तह़्तल आयह : 34, जि. 9, स. 543

www.dawateislami.net

या मि'मार के रूप में बड़े बड़े औलिया होते हैं । हर कोई इन की शनाख़्त नहीं कर सकता । रूए ज़मीन पर मु-तअ़द्दद औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام हर वक़्त मौजूद रहते हैं और इन्हीं की ब-र-कत से दुन्या का निज़ाम चलता है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से किसी शख़्स ने शिकायत की, कि हुज़ूर ! क्या वज्ह है कि आज कल देहली का इन्तिज़ाम ''बहुत सुस्त'' है ? फ़रमाया : आज कल यहां के साह़िबे ख़िदमत (या'नी अब्दाले देहली) सुस्त हैं। पूछा, कौन साह़िब हैं ? फ़रमाया : फुलां फल फ़रोश जो फुलां बाज़ार में ख़रबूज़े फ़रोख़्त करते हैं। पूछने वाले साह़िब उन के पास पहुंचे और ख़रबूज़े काट काट कर और चख चख कर सब ना पसन्द कर के टोकरे में रख दिये । इस क़दर नुक़्सान कर देने वाले को भी वोह कुछ नहीं बोले । कुछ अ़र्से के बा'द देखा कि इन्तिज़ाम बिल्कुल दुरुस्त है और ह़ालात बदल गए हैं तो उसी शख़्स ने फिर पूछा कि आज कल कौन हैं ? शाह साह़िब ने फ़रमाया : एक सक़्क़ा हैं जो चांदनी चोक में पानी पिलाते हैं मगर एक गिलास की एक छदाम (छदाम उन दिनों सब से छोटा सिक्का था या'नी एक पैसे का चोथाई ह़िस्सा) लेते हैं। येह एक छदाम ले गए और उन को दे कर उन से पानी मांगा। उन्हों ने पानी दिया इन्हों ने पानी गिरा दिया और दूसरा गिलास मांगा। उन्हों ने पूछा और छदाम है ? कहा : नहीं । उन्हों ने एक धोल (चांटा)

www.dawateislami.net

रसीद किया और कहा ख़रबूज़े वाला समझा है ?[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो, आमीन ।

करामत की ता'रीफ़

अ़र्ज़ : करामत किसे कहते हैं ?

इर्शाद : आ़रिफ़ बिल्लाह, नासिहुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى करामत की ता'रीफ़ यूं फ़रमाते हैं : करामत से मुराद वोह ख़िलाफ़े आ़दत अम्र है जिस का ज़ुहूर तह़द्दी (चेलेन्ज) व मुक़ाबले के लिये न हो और वोह ऐसे बन्दे के हाथ पर ज़ाहिर हो जिस की नेकनामी मश्हूर व ज़ाहिर हो, वोह अपने नबी का मुत्तबेअ़ (पैरवी करने वाला), दुरुस्त अ़क़ीदा रखने वाला और नेक अ़मल का पाबन्द हो ।[2]

याद रखिये ! नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत क़ब्ले (ए'लाने) नुबुव्वत ज़ाहिर हो उस को इरहास (और ए'लाने नुबुव्वत के बा'द ज़ाहिर हो तो उसे मो'जिज़ा) कहते हैं और वली से जो ऐसी बात सादिर हो उस को करामत कहते हैं और आ़म मुअमिनीन से जो सादिर हो उसे मऊ़नत कहते हैं और बेबाक फ़ुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो उन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो उस को इस्तिद्राज कहते हैं और उन के ख़िलाफ़

---

1 ..... सच्ची ह़िकायात, ह़िस्सए सिवुम, स. 202 ता 203

2 .....حديقة ندية، الباب الثانى، الفصل الاوّل فى تصحيح الاعتقاد، ۱/۲۹۲

www.dawateislami.net

ज़ाहिर हो तो इहानत है ।[1]

करामत और मो'जिज़े में फ़र्क़

अ़र्ज़ : मो'जिज़ा और करामत में क्या फ़र्क़ है ?

इर्शाद : मो'जिज़ा और करामत में फ़र्क़ बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र बिन फ़ौरक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर तो मो'जिज़ात ज़ाहिर करना लाज़िम होता है जब कि वली के लिये करामात छुपाना ज़रूरी होता है । फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नबी उस के मो'जिज़ा होने का दा'वा करता है और उस को यक़ीनी सूरत में पेश करता है जब कि वली करामत का दा'वा नहीं करता और न उसे क़त़ई त़ौर पर पेश करता है क्यूं कि वोह मक्र (धोका) भी साबित हो सकती है ।

फ़न्ने तसव्वुफ़ के यगानए रोज़गार ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू बक्र अश्अ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मो'जिज़ात सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ ख़ास हैं जब कि करामात एक वली से सादिर होती हैं जिस त़रह़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से मो'जिज़ात सादिर होते हैं मगर वली से मो'जिज़े का वुक़ूअ़ मुम्किन नहीं होता क्यूं कि मो'जिज़े के लिये एक शर्त़ येह है कि इस के साथ दा'वए नुबुव्वत भी हो जब कि कोई वली नुबुव्वत का दा'वा नहीं कर सकता लिहाज़ा इस से जो कुछ ज़ाहिर होगा

मदीना

1...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, जि. 1, स. 58

www.dawateislami.net

मो'जिज़ा नहीं कहलाएगा ।[1]

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : मो'जिज़ा और करामत में एक फ़र्क़ येह भी है कि हर वली के लिये करामत का होना ज़रूरी नहीं है मगर हर नबी के लिये मो'जिज़े का होना ज़रूरी है क्यूं कि वली के लिये येह लाज़िम नहीं है कि वोह अपनी विलायत का ए'लान करे या अपनी विलायत का सुबूत दे बल्कि वली के लिये तो येह भी ज़रूरी नहीं है कि वोह ख़ुद भी जाने कि मैं वली हूं चुनान्चे येही वज्ह है कि बहुत से औलियाउल्लाह ऐसे भी हुए कि उन को अपने बारे में येह मा'लूम ही नहीं हुवा कि वोह वली हैं बल्कि दूसरे औलियाए किराम ने अपने कश्फ़ो करामत से उन की विलायत को जाना पहचाना और उन के वली होने का चरचा किया मगर नबी के लिये अपनी नुबुव्वत का इस्बात ज़रूरी है और चूंकि इन्सानों के सामने नुबुव्वत का इस्बात बिग़ैर मो'जिज़ा दिखाए हो नहीं सकता, इस लिये हर नबी के लिये मो'जिज़े का होना ज़रूरी और लाज़िमी है ।[2]

इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है

अ़र्ज़ : क्या वली से करामत का ज़ाहिर होना ज़रूरी है ?

इर्शाद : वली से करामत का ज़ाहिर होना ज़रूरी नहीं जैसा कि

मदينه

1...... رسالۂ قُشَیۡرِیة، فصل فی بیان عقائدھم..الخ، باب کرامات الاولیاء، ص۳۷۹، ملخّصًا

2...... करामाते सहाबा, स. 38

www.dawateislami.net

अभी मो'जिज़े और करामत के फ़र्क़ में बयान हुवा और न ही येह ज़रूरी है कि जो करामत एक वली से सादिर हो वोही दूसरे औलिया से भी ज़ाहिर हो। याद रखिये ! अस्ल करामत, शरीअ़त व सुन्नत पर इस्तिक़ामत के साथ अ़मल करना है जो जितना ज़ियादा शरीअ़त व सुन्नत का पाबन्द होगा वोह उतना ही ज़ियादा बा करामत होगा चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल क़ासिम गरगानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : पानी पर चलना, हवा में उड़ना और ग़ैब की ख़बरें देना करामत नहीं बल्कि करामत येह है कि वोह शख़्स सरापा अम्र बन जाए या'नी शरीअ़त का मुत़ीअ़ व फ़रमां पज़ीर हो जाए उस त़रह़ कि उस से ह़राम का सुदूर न हो।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی फ़रमाते हैं : अगर तुम देखो कि किसी शख़्स को यहां तक करामात दी गई हैं कि वोह हवा में उड़ता है तो उस के धोके में न आओ यहां तक कि देखो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अम्र व नह्य व ह़िफ़्ज़े ह़ुदूद और अदाए शरीअ़त में कैसा है (या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने जिन बातों का ह़ुक्म दिया है उन पर अ़मल करता है या नहीं और जिन बातों से मन्अ़ किया है उन से बाज़ रहता है या नहीं, नीज़ शरीअ़त की ह़दों और उस की पैरवी का कितना ख़याल रखता है।)[2]

مدینہ

1 .....کیمیائے سعادت، رکنِ سوم مہلکات، اصل دہم، ۲/۷۴۹

2 ..... شعب الایمان، باب فی نشر العلم، ۲/۳۰۱، رقم: ۱۸۶۰

www.dawateislami.net

अ़वाम की ख़ुद साख़्ता बयान कर्दा अ़लामात और उन की इस्लाह़

अ़र्ज़ : फ़ी ज़माना कुछ लोग वली नहीं होते मगर अ़वामुन्नास ग़लत़ फ़ह्मी की बिना पर उन्हें वली मसझ लेते हैं इस के बारे में भी वज़ाह़त फ़रमा दीजिये, नीज़ कैसे वलिय्युल्लाह के हाथ पर बैअ़त करनी चाहिये ?

इर्शाद : अ़वामुन्नास को अपनी अ़क़्ल के घोड़े दौड़ाने और अपनी त़रफ़ से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ख़ुद साख़्ता अ़लामात मुक़र्रर करने के बजाए उ़-लमाए ह़क़्क़ा अहले सुन्नत व जमाअ़त व बुज़ुर्गाने दीन رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के बयान कर्दा इर्शादात के मुत़ाबिक़ अ़मल करना चाहिये। अ़वामुन्नास की ख़ुद साख़्ता बयान कर्दा अ़लामात और उन की इस्लाह़ करते हुए मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : लोगों ने वली की अ़लामतें अपनी त़रफ़ से मुक़र्रर कर ली हैं : कोई कहता है कि वली वोह जो करामात दिखाए मगर येह ग़लत़ है क्यूं कि शैत़ान बहुत से अ़जाइबात कर के दिखाता है, सन्यासी जोगी सदहा करतब कर लेते हैं, दज्जाल तो ग़ज़ब ही करेगा, मुर्दों को जिलाए (ज़िन्दा करे) गा, बारिश बरसाएगा। अगर अ़जाइबात पर विलायत का मदार हो तो शैत़ान और दज्जाल भी वली होने चाहिएं । सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : हवा में उड़ना विलायत हो तो शैत़ान बड़ा वली होना चाहिये मगर ऐसा नहीं हो सकता। कोई कहता है कि वली वोह जो तारिकुद्दुन्या हो, घरबार न रखता हो। इसी त़रह़ बा'ज़ लोग कहा करते हैं : वोह वली ही कैसा जो रखे पैसा, मगर येह भी धोका है। ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हुज़ूर ग़ौसुस्स-क़लैन, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा, मौलाना रूम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْقَیُّوم बड़े मालदार थे, क्या येह वली न थे ? येह तो वलिय्युल्लाह ही नहीं, वलीगर थे लेकिन इस के बर अ़क्स बहुत से सन्यासी कुफ़्फ़ार तारिकुद्दुन्या हैं, क्या वोह वली हैं ? हरगिज़ नहीं। कामिल वोह है जिस के सर पर शरीअ़त हो, बग़लों में त़रीक़त, सामने दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात, इन सब को संभाले हुए राहे ख़ुदा त़ै करता चला जाए। मस्जिद में नमाज़ी हो, मैदान में ग़ाज़ी हो, कचहरी में क़ाज़ी और घर में पक्का दुन्यादार (या'नी दुन्यवी मुआ़-मलात में मसरूफ़े कार) ग़-रज़े कि मस्जिद में आए तो मला-इ-कए मुक़र्रबीन का नमूना बन जाए और बाज़ार में जाए तो मला-इ-कए मुदब्बिराते अम्र (या'नी उमूरे दुन्यविय्या की तदबीर करने वाले फ़िरिश्तों) के से काम करे। बा'ज़ बेहूदे दा'वए विलायत करें मगर न नमाज़ पढ़ें, न रोज़े के पास जाएं और शैख़ी मारें कि हम का'बे में नमाज़ पढ़ते हैं, سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! नमाज़ तो का'बे

www.dawateislami.net

में पढ़ें और रोटी व नज़राने मुरीद के घर से लें, येह पूरे शयातीन हैं । जब तक होशो ह़वास क़ाइम हैं तब तक अह़कामे शरइ़य्या मुआ़फ़ नहीं हो सकते ।[1]

जिस के हाथ पर बैअ़त करना दुरुस्त हो उस की चार शराइत़ हैं, चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ऐसे शख़्स से बैअ़त का हुक्म है जो कम अज़ कम येह चारों शर्तें रखता हो : **अव्वल :** सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो । **दुवुम :** इ़ल्मे दीन रखता हो । **सिवुम :** फ़ासिक़ न हो । **चहारुम :** उस का सिल्सिला **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल हो । अगर इन में से एक बात भी कम है तो उस के हाथ पर बैअ़त की इजाज़त नहीं ।[2]

मज्ज़ूब किसे कहते हैं ?

अ़र्ज़ : बा'ज़ लोग हर पागल व बे अ़क़्ल को वली समझ लेते हैं क्या येह दुरुस्त है ?

इर्शाद : हर पागल व बे अ़क़्ल को वली समझ लेना सरासर ग़लत़ फ़ह्मी है । शायद लोग येह ख़याल करते हैं कि पागल व दीवाने मज्ज़ूब हैं मगर याद रखिये कि इस में कोई शक नहीं कि ह़क़ीक़ी मज्ज़ूब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली होता है

1..... शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 299-301, मुलख़्ख़सन

2..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 603

www.dawateislami.net

मगर हर पागल व दीवाना मज्ज़ूब भी नहीं होता। मजाज़ीब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वोह मख़्सूस बन्दे हैं जो लत़ाइफ़ की बेदारी की वज्ह से जब यक-दम रूह़ानिय्यत की बुलन्द मन्ज़िलों में मुस्त़ग़रक़ हो जाते हैं तो उन की शुऊ़री सलाह़िय्यतें मग़्लूब हो जाती हैं जिस की वज्ह से येह होशो ह़वास से बे नियाज़ हो कर दुन्यवी दिल चस्पियों से ला तअ़ल्लुक़ हो जाते हैं, इन्हें दीगर मख़्लूक़ से कोई वासित़ा व तअ़ल्लुक़ नहीं होता, वोह अज़ ख़ुद न खाते हैं, न पीते हैं, न पहनते हैं, न नहाते हैं, इन्हें सर्दी गर्मी, नफ़्अ़ व नुक़्सान की ख़बर तक नहीं होती, अगर किसी ने खिला दिया तो खा पी लिया, पहना दिया तो पहन लिया, नहला दिया तो नहा लिया, सर्दियों में बिग़ैर कम्बल चादर लिये सुकून और गर्मियों में लिह़ाफ़ ओढ़ लें तो परवाह नहीं या'नी मज्ज़ूब ब ज़ाहिर होश में नहीं होता इस लिये वोह शरीअ़त का मुकल्लफ़ भी नहीं होता या'नी इस पर शर-ई अह़काम लागू नहीं होते मगर इस पर शर-ई अह़काम पेश किये जाएं तो उन की मुख़ा-लफ़त भी नहीं करता और येह भी याद रहे कि साह़िबे अ़क़्लो शुऊ़र के लिये किसी मज्ज़ूब से सरज़द होने वाले ख़िलाफ़े शर-अ़ कामों को अपने लिये ह़ुज्जत व दलील बना कर उस की इत्तिबाअ़ करना या उन की इत्तिबाअ़ में ख़ुद को शर-ई अह़काम से मुस्तस्ना ख़याल करना जाइज़ नहीं।

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बा'ज़ मज्ज़ूबीन قُدِّسَتْ اَسْرَارُهُم ने जो कुछ ब ह़ाले जज़्ब किया, वोह सनद नहीं हो सकता। मज्ज़ूब अ़क़्ल व होशे दुन्या नहीं रखता। उस के अफ़्आ़ल, उस के इरादे व इख़्तियारे सालेह़ से नहीं होते वोह मा'ज़ूर है।

होश में जो न हो वोह क्या न करे

कि सुल्त़ान नगीरद ख़राज अज़ ख़राब

(क्यूं कि बादशाह ग़ैर आबाद और वीरान ज़मीन से टेक्स नहीं लेता)[1]

एक और मक़ाम पर मज्ज़ूबों के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं कि वोह ख़ुद सिल्सिले में होते हैं, मगर उन का कोई सिल्सिला फिर उन से आगे नहीं चलता। या'नी मज्ज़ूब अपने सिल्सिले में मुन्तहा (या'नी कामिल) होता है। अपने जैसा दूसरा मज्ज़ूब पैदा नहीं कर सकता। वज्ह ग़ालिबन येह है कि मज्ज़ूब मक़ामे ह़ैरत ही में फ़ना हो जाता है और बक़ा ह़ासिल कर लेता है। इस लिये उस की ग़ैर की त़रफ़ तवज्जोह नहीं होती।[2]

कुतुबे सीरत व तसव्वुफ़ में औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के तज़्किरे के साथ साथ मजाज़ीब का ज़िक्रे ख़ैर भी

1..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 599

2..... अन्वारे रज़ा, स. 243

www.dawateislami.net

मिलता है । इन की अ़-ज़-मतो रिफ़्अ़त को सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तस्लीम किया है । बा'ज़ लोग पैदाइशी मज्ज़ूब होते हैं, बा'ज़ पर रूहानी मनाज़िल तै़ करते हुए किसी मर्ह़ले पर जज़्ब की कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है और कुछ नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ग़-ल-बए शौक़ और वुफ़ूरे इ़श्क़ से ज़िन्दगी के आख़िरी सालों में आ़लमे इस्तिग़राक़ में चले जाते हैं ।

सच्चे मज्ज़ूब की पहचान

अ़र्ज़ : सच्चे मज्ज़ूब की पहचान क्या है ?

इर्शाद : सच्चे मज्ज़ूब की पहचान येह है कि अगर उस पर शर-ई अह़काम पेश किये जाएं तो होश में न होने के बा वुजूद वोह उन्हें रद करेगा और न ही चेलेन्ज करेगा जैसा कि मेरे आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सच्चे मज्ज़ूब की येह पहचान है कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा का कभी मुक़ाबला न करेगा ।[1]

ज़ाहिरी और बात़िनी शरीअ़त की ह़क़ीक़त

अ़र्ज़ : बा'ज़ लोग अपने आप को मज्ज़ूब या फ़क़ीर का नाम दे कर, ख़िलाफ़े शरीअ़त कामों को مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ अपने लिये जाइज़ क़रार देते हुए कहते हैं कि येह त़रीक़त का

1 ..... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 278

www.dawateislami.net

मुआ़-मला है, येह तो फ़क़ीरी लाइन है हर एक को समझ में नहीं आ सकती। फिर अगर उन से नमाज़ पढ़ने को कहा जाए तो مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहते हैं कि येह ज़ाहिरी शरीअ़त, ज़ाहिरी लोगों के लिये है, हम बात़िनी अज्साम के साथ ख़ानए का'बा या मदीने में नमाज़ पढ़ते हैं वग़ैरा वग़ैरा। ऐसों के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ?

इर्शाद : शरीअ़त छोड़ कर ख़िलाफ़े शर-अ़ कामों को त़रीक़त या फ़क़ीरी लाइन क़रार देना या त़रीक़त को शरीअ़त से जुदा ख़याल करना यक़ीनन गुमराही है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن शरीअ़त और त़रीक़त के बाहमी तअ़ल्लुक़ को यूं बयान फ़रमाते हैं शरीअ़त मम्बअ़ है और त़रीक़त इस में से निकला हुवा एक दरिया है। उ़मूमन किसी मम्बअ़ या'नी पानी निकलने की जगह से अगर दरिया बहता हो तो उसे ज़मीनों को सैराब करने में मम्बअ़ की ह़ाजत नहीं होती लेकिन शरीअ़त वोह मम्बअ़ है कि इस से निकले हुए दरिया या'नी त़रीक़त को हर आन इस की ह़ाजत है कि अगर शरीअ़त के मम्बअ़ से त़रीक़त के दरिया का तअ़ल्लुक़ टूट जाए, तो सिर्फ़ येही नहीं कि आयिन्दा के लिये इस में पानी नहीं आएगा बल्कि येह तअ़ल्लुक़ टूटते ही दरियाए त़रीक़त फ़ौरन फ़ना हो जाएगा।[1]

---

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 525, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : त़रीक़त मुनाफ़िये शरीअ़त (या'नी शरीअ़त के ख़िलाफ़) नहीं वोह शरीअ़त ही का बात़िनी ह़िस्सा है, बा'ज़ जाहिल मु-तसव्विफ़ जो येह कह दिया करते हैं कि त़रीक़त और है शरीअ़त और, मह्ज़ गुमराही है और इस ज़ो'मे बात़िल (ग़लत़ ख़याल) के बाइ़स अपने आप को शरीअ़त से आज़ाद समझना सरीह़ कुफ़्र व इल्ह़ाद (कुफ़्र व बे दीनी है) । अह़कामे शरइ़य्या की पाबन्दी से कोई वली कैसा ही अ़ज़ीम हो सुबुक-दोश नहीं हो सकता । बा'ज़ जुह्हाल जो येह बक देते हैं कि शरीअ़त रास्ता है, रास्ते की ह़ाजत उन को जो मक़्सूद तक न पहुंचे हों, हम तो पहुंच गए। सय्यिदुत्ताइफ़ा ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन्हें फ़रमाया : صَدَقُوْا لَقَدْ وَصَلُوْا، وَلٰكِنْ اِلٰى اَيْنَ؟ اِلَى النَّارِ ''वोह सच कहते हैं बेशक पहुंचे, मगर कहां ? जहन्नम को।''[1] अलबत्ता अगर मज्ज़ूबियत से अ़क़्ले तक्लीफ़ी ज़ाइल हो गई हो जैसे ग़शी वाला तो उस से क़-लमे शरीअ़त उठ जाएगा मगर येह भी समझ लो जो इस क़िस्म का होगा उस की ऐसी बातें कभी न होंगी, शरीअ़त का मुक़ाबला कभी न करेगा ।[2]

مدینہ

1 ..... الیواقیت والجواہر، الفصل الرابع، المبحث السادس والعشرون، باختلاف بعض الالفاظ، ص۲۰۶

2 ..... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, जि. 1, स. 265-267

www.dawateislami.net

क्या वली कबीरा गुनाहों का इरतिकाब कर सकता है ?

अ़र्ज़ : क्या वली कबीरा गुनाहों का इरतिकाब कर सकता है ?

इर्शाद : गुनाहों से मा'सूम होना सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और फ़िरिश्तों का ख़ास्सा है कि हि़फ़्ज़े इलाही के वा'दे के सबब इन से गुनाहों का सादिर होना शरअ़न मुह़ाल है, इन के इ़लावा से गुनाह का सादिर होना मुह़ाल नहीं लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को गुनाहों से मह़फ़ूज़ रखता है चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : नबी का मा'सूम होना ज़रूरी है और येह इ़स्मते नबी और मलक (फ़िरिश्ते) का ख़ास्सा है कि नबी और फ़िरिश्ते के सिवा कोई मा'सूम नहीं, इमामों को अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) की त़रह़ मा'सूम समझना गुमराही व बद दीनी है। इ़स्मते अम्बिया के येह मा'ना हैं कि इन के लिये हि़फ़्ज़े इलाही का वा'दा हो लिया, जिस के सबब इन से सुदूरे गुनाह शरअ़न मुह़ाल है ब ख़िलाफ़ अइम्मा व अकाबिर औलिया رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें मह़फ़ूज़ रखता है, इन से गुनाह होता नहीं मगर हो तो शरअ़न मुह़ाल भी नहीं ।[1]

1...... बहारे शरीअ़त, हि़स्सए अव्वल, जि. 1, स. 38-39

www.dawateislami.net

विलायत बे इ़ल्म को नहीं मिलती

अ़र्ज़ : क्या वली का आ़लिम होना शर्त़ है ?

इर्शाद : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1360 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त (जिल्द अव्वल) सफ़्ह़ा 264 पर है : "विलायत बे इ़ल्म को नहीं मिलती, ख़्वाह इ़ल्म बत़ौरे ज़ाहिर ह़ासिल किया हो, या इस मर्तबे पर पहुंचने से पेश्तर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर उ़लूम मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) कर दिये हों ।"

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "ह़ाशा ! न शरीअ़त व त़रीक़त दो राहें हैं न औलिया कभी ग़ैर उ़-लमा हो सकते हैं। ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی शर्ह़े जामेअ़ सग़ीर में और आ़रिफ़ बिल्लाह सय्यिद अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ह़दीक़ए नदिय्या में फ़रमाते हैं कि इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने फ़रमाया : इ़ल्मे बात़िन न जानेगा मगर वोह जो इ़ल्मे ज़ाहिर जानता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कभी किसी जाहिल को अपना वली न बनाया। या'नी बनाना चाहा तो पहले उसे इ़ल्म दे दिया उस के बा'द वली किया कि जो इ़ल्मे ज़ाहिर नहीं रखता इ़ल्मे बात़िन कि इस का स-मरा व नतीजा है क्यूंकर पा सकता है।"[1]

1...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 530 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

क्या वली को अपनी विलायत का इ़ल्म होता है ?

अ़र्ज़ : वली को अपनी विलायत (या'नी वली होने) का इ़ल्म होता है या नहीं ?

इर्शाद : इस बारे में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ के नज़्दीक इ़ल्म होता है और बा'ज़ के नज़्दीक नहीं होता।[1]

ह़ाफ़िज़े कुरआन कितनों की शफ़ाअ़त करेगा ?

अ़र्ज़ : ह़ाफ़िज़ कितने अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा और उस के वालिदैन को क्या अज्र मिलेगा ?

इर्शाद : बा अ़मल ह़ाफ़िज़े कुरआन क़ियामत के दिन अपने ख़ानदान के दस अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा और उस के वालिदैन को ऐसा नूरानी ताज पहनाया जाएगा कि जिस की रोशनी सूरज की रोशनी से ज़ियादा अच्छी होगी चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाए काएनात, मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने कुरआन पढ़ा और इस को याद कर लिया, इस के ह़लाल को ह़लाल

[1] رسالۃ قُشَیْرِیۃ، فصل فی بیان عقائدھم...الخ، باب کرامات الاولیاء، ص۳۷۹

www.dawateislami.net

समझा और ह़राम को ह़राम जाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दाख़िले जन्नत फ़रमाएगा और उस के घर वालों में से दस शख़्सों के बारे में उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा, जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका था।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ जुहन्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने क़ुरआन पढ़ा और जो कुछ इस में है उस पर अ़मल किया, उस के वालिदैन को क़ियामत के दिन ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस की रोशनी सूरज से अच्छी है अगर वोह (सूरज) तुम्हारे घरों में होता, तो अब ख़ुद उस अ़मल करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या गुमान है।[2]

ह़ाफ़िज़े क़ुरआन से कहा जाएगा कि क़ुरआने पाक की तिलावत करता जा और जन्नत के द-रजात तै़ करता जा चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा कि क़ुरआन पढ़ता जा और (जन्नत के द-रजात) तै़ करता जा और ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि तू दुन्या में ठहर ठहर कर पढ़ा करता था तू

مدینہ

1 ..... ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل..الخ، ۴/۴۱۴، حدیث: ۲۹۱۴

2 ..... أبوداود، کتاب الوتر، باب فی ثواب قراءۃ القرآن، ۲/۱۰۰، حدیث: ۱۴۵۳

www.dawateislami.net

जहां आख़िरी आयत पढ़ेगा वहीं तेरा ठिकाना होगा ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान ख़त़्त़ाबी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَلِى फ़रमाते हैं : रिवायात में आया है कि कुरआन की आयतों की ता'दाद जन्नत के द-रजात के बराबर है लिहाज़ा क़ारी से कहा जाएगा कि तू जितनी आयतें पढ़ सकता है उतने द-रजे तै़ करता जा तो जो उस वक़्त पूरा कुरआने पाक पढ़ लेगा वोह जन्नत के इन्तिहाई (सब से आख़िरी) द-रजे को पा लेगा और जिस ने कुरआन का कोई जुज़ (ह़िस्सा) पढ़ा तो उस के सवाब की इन्तिहा क़िराअत की इन्तिहा तक होगी ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के बे शुमार मदारिस ब नाम ''मद्र-सतुल मदीना'' क़ाइम हैं जिन में म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों को कुरआने पाक ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। नीज़ बालिग़ान के लिये उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा ''मद्र-सतुल मदीना बराए बालिग़ान'' का भी एहतिमाम होता है जिस में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाइयों को हुरूफ़ की सह़ीह़ अदाएगी के साथ कुरआने पाक पढ़ना सिखाया जाता है नीज़ सुन्नतों की तरबिय्यत भी दी जाती है। आप

مدینه

1 ...... اَبُوداود، کتاب الوتر، باب استحباب الترتیل فی القراءۃ، ۲/۱۰۴، حدیث: ۱۴۶۴

2 ...... مَعالِمُ السُّنَن، ۱/۲۵۱

www.dawateislami.net

भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक सीखने सिखाने और इस की ता'लीमात को आ़म करने का ज़ेह्न बनेगा।

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाए
हमारा शौक़ से कुरआन पढ़ना काम हो जाए

आ़लिम कितने अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा ?

अ़र्ज़ : आ़लिम कितने अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा ?

इर्शाद : क़ियामत के दिन उ़-लमा बे हिसाब लोगों की शफ़ाअ़त करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : क़ियामत के दिन तीन गुरौह शफ़ाअ़त करेंगे : अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फिर उ़-लमा फिर शु-हदा।[1]

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : जिस ने किसी आ़लिम की ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ज़ियारत की और जिस ने उ़-लमा से मुसा-फ़ह़ा किया गोया उस ने मुझ से मुसा-फ़ह़ा किया और (क़ियामत के दिन) आ़लिम से कहा जाएगा : अपने शागिर्दों की शफ़ाअ़त करो अगर्चे वोह

1 ..... اِبْنِ ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر الشفاعۃ، ۵۲۶/۴، حدیث: ۴۳۱۳

www.dawateislami.net

आस्मान के सितारों के बराबर हों ।[1]

सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जब क़ियामत का दिन होगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़बिदीन और मुजाहिदीन से फ़रमाएगा : तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तो उ़-लमा अ़र्ज़ करेंगे : हमारे इ़ल्म की बदौलत उन्हों ने इ़बादत की और जिहाद किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : तुम मेरे नज़्दीक मेरे बा'ज़ फ़िरिश्तों की मानिन्द हो, तुम शफ़ाअ़त करो तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी, वोह शफ़ाअ़त करेंगे फिर जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।[2]

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : उ़-लमा बे गिनती लोगों की शफ़ाअ़त करेंगे ह़त्ता कि आ़लिम के साथ जिन लोगों को कुछ भी तअ़ल्लुक़ होगा उस की शफ़ाअ़त करेंगे । कोई कहेगा : मैं ने वुज़ू के लिये पानी दिया था, कोई कहेगा : मैं ने फ़ुलां काम कर दिया था ।[3]

मस्जिद में दर्स की इजाज़त न हो तो ?

अ़र्ज़ : अगर किसी मस्जिद में दर्स की इजाज़त न हो तो क्या करें ?

مدینہ

1...... فِردَوسُ الاخبار، باب الیاء، فصل فی تفسیر آی من...الخ، ۲/۵۰۳، حدیث: ۸۵۱۷، ماخوذاً

2...... إحياءُ العلوم، كتاب العلم، الباب الاول، فضيلة التعليم، ۱/۲۶

3...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 92

www.dawateislami.net

इर्शाद : अगर किसी मस्जिद में दर्सो बयान करने की इजाज़त न हो तो मस्जिद की इन्तिज़ामिया पर इन्फ़िरादी कोशिश या अ़लाक़े की शख़्सय्यात वग़ैरा के ज़रीए़ इजाज़त लेने की कोशिश की जाए। अगर इस त़रह़ भी इजाज़त न मिले तो मस्जिद से बाहर दरवाज़े पर दर्सो बयान की तरकीब बना ली जाए। अगर कोई पूछे कि मस्जिद के अन्दर दर्स क्यूं नहीं देते ? तो मस्जिद की इन्तिज़ामिया की मुख़ा–लफ़त किये बिग़ैर इन्तिहाई नरमी के साथ येह अ़र्ज़ कर दीजिये कि ''मस्जिद में दर्स की इजाज़त नहीं, इस लिये हम बाहर दर्स दे रहे हैं'' इस से ज़ाइद कुछ मत कहिये। हो सकता है कि कोई साहि़बे दर्द ख़ुद ही आप को मस्जिद में दर्स की इजाज़त दिलवा दे।

बैरूने मुमालिक में म–दनी काम मज़्बूत़ करने का त़रीक़ा

अ़र्ज़ : पाकिस्तान के इ़लावा दीगर मुमालिक में म–दनी काम कैसे मज़्बूत़ किया जाए ?

इर्शाद : सह़ीह़ बात तो येह कि ''काम, काम सिखाता है'' जब आप किसी भी जगह मेह़नत व लगन और इस्तिक़ामत के साथ म–दनी काम करते रहेंगे तो आप के ज़ेह़न में ख़ुद ब ख़ुद म–दनी काम बढ़ाने और मज़्बूत़ करने की नई नई तरकीबें आती रहेंगी। दूसरे मुमालिक में म–दनी काम

www.dawateislami.net

बढ़ाने और मज़्बूत़ करने के लिये वहां के ''मक़ामी लोगों'' में काम किया जाए कि अगर आप वहां सिर्फ़ पाकिस्तानियों या हिन्दुस्तानियों ही पर कोशिश करते रहेंगे तो सह़ीह़ मा'नों में काम्याब नहीं हो सकेंगे क्यूं कि येह वहां अक़्लिय्यत में होते हैं और अक़्लिय्यत की निस्बत मक़ामी आबादी की अहम्मिय्यत और अ-सरो रुसूख़ ज़ियादा होता है। तरबिय्यती इज्तिमाआ़त वग़ैरा के मौक़अ़ पर उन मुमालिक से जो क़ाफ़िले तशरीफ़ लाते हैं उन में वहां के मक़ामी (Native) इस्लामी भाइयों पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के ज़ियादा से ज़ियादा लाने की कोशिश की जाए ताकि उन की सह़ीह़ इस्लामी उसूलों के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत हो और वोह अपने मुमालिक में जा कर दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धूमें मचा सकें।

अक्सर ज़ैतून मुबारक खाने की वज्ह

अ़र्ज़ : आप को दस्तर ख़्वान पर बारहा ज़ैतून इस्ति'माल करते देखा गया है और आप इस के बीज भी फेंकने से मन्अ़ फ़रमाते हैं इस की क्या वज्ह है ?

इर्शाद : मैं ज़ैतून शरीफ़ को तबर्रुकन इस्ति'माल करता हूं और इस के बीज को अदब की वज्ह से नहीं फेंकता क्यूं कि ज़ैतून एक मुक़द्दस दरख़्त है जिस के बारे में पारह 18 **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 35 में इर्शाद होता है :

www.dawateislami.net

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ

ब-र-कत वाले पेड़ ज़ैतून से।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद सावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ज़ैतून शरीफ़ के लिये सत्तर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने ब-र-कत की दुआ फ़रमाई है, जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बल्कि ख़ुद सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी शामिल हैं।[1]

इसी आयते मुबा-रका के तह़्त तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है : इस के फल को ''ज़ैतून'' और तेल को ''ज़ैत'' कहते हैं। तुफ़ाने नूह़ के बा'द सब से पहला दरख़्त कोहे तूर पर ज़ैतून शरीफ़ का उगा (जहां ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ से हम-कलाम हुए।) बा'ज़ उ-लमा फ़रमाते हैं : तीन हज़ार साल तक येह दरख़्त बाक़ी रहता है।[2] इस के तेल से चराग़ रोशन किये जाते हैं और बतौ़रे तेल भी इस्ति'माल किया जाता है जो कि तेलों में सब से ज़ियादा शफ़्फ़ाफ़ और रोशनी देने वाला है और इस के पत्ते नहीं झड़ते।[3]

---

1 ..... تفسیرِ صاوی، پ۱۸، النور، تحت الآیۃ ۳۵، ۴/۱۴۰۵

2 ..... تفسیرِ خازن، پ۱۸، المؤمنون، تحت الآیۃ ۲۰، ۳/۳۲۳، ملتقطاً

3 ..... تفسیرِ خازن، پ۱۸، النور، تحت الآیۃ ۳، ۳/۳۵۳-۳۵۴، ملتقطاً

www.dawateislami.net

मोह़तरम नबी, मक्की म-दनी, मह़बूबे रब्बे ग़नी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : रो-ग़ने ज़ैतून खाओ भी और लगाओ भी कि येह मुबारक दरख़्त से है।[1] अति़ब्बा का क़ौल है : ज़ैतून का तेल रोज़ाना पच्चीस ग्राम खाने से पुरानी क़ब्ज़ दूर होती है, ज़ैतून का अचार भूक को बढ़ाता है और क़ब्ज़ कुशा है। येह भी कहा जाता है कि ज़ैतून का तेल गन्दे कोलेस्ट्रोल को दूर करता है। ज़ैतून शरीफ़ का तेल पकाने में मत डालिये बल्कि खाना खाते वक़्त सालन वग़ैरा पर कच्चा ही चम्मच वग़ैरा से डाल कर खाइये, बिल्कुल भी बद ज़ाएक़ा नहीं होता।

ता़क़ अ़दद ज़ैतून इस्ति'माल करने में ह़िक्मत

अ़र्ज़ : येह भी देखा गया है कि आप ता़क़ अ़दद (या'नी एक या तीन की ता'दाद) में ज़ैतून खाते हैं इस में क्या ह़िक्मत है ?

इर्शाद : ज़ैतून शरीफ़ हो या और कोई ऐसी चीज़ (म-सलन इन्जीर, ख़ूबानी, अख़रोट और बादाम वग़ैरा) जो शुमार करने के लाइक़ हो उसे ता़क़ अ़दद में इस्ति'माल किया जाए। इस की ह़िक्मत बयान करते हुए हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : अगर ख़ुर्मा या ज़र्दआलू या वोह चीज़ जो शुमार करने

مدینہ

1 ...... ترمذی، کتاب الاطعمۃ، باب ما جاء فی اکل الزیت، ۳/۳۳۶۔۳۳۷، حدیث:۱۸۵۸

www.dawateislami.net

के लाइक़ हो तो उसे ताक़ अ़दद में खाए जैसे सात, ग्यारह, इक्कीस ताकि उस के सब काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ मुना-सबत पैदा करें क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ताक़ है, उस का जोड़ा नहीं और जिस काम के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किसी त़रह़ से भी न हो वोह काम बात़िल और बे फ़ाएदा होगा इसी बिना पर ताक़ जुफ़्त से औला है कि ह़क़ त़आ़ला से मुना-सबत रखता है (या'नी इस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत का ज़िक्र भी रहेगा कि वोह वाह़िदो यक्ता है)।[1]

दुआ़ भी ताक़ अ़दद में मांगनी चाहिये कि रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : अ़दद ताक़ हो कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वित्र (या'नी अकेला) है, वित्र (या'नी ताक़ अ़दद) को दोस्त रखता है।"[2] पांच बेहतर है और सात का अ़दद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को निहायत मह़बूब और अक़ल मर्तबा तीन (सब से कम द-रजा तीन का) है इस से कम न मांगे।[3]

مدینہ

1 ..... کیمیائے سعادت، رکن دوم، اصل اوّل، ۱/۲۷۳

2 ..... نسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النہار، باب الامر بالوتر، ص۲۹۱، حدیث: ۱۶۷۲، ماخوذاً

3 ..... फ़ज़ाइले दुआ़, स. 81

www.dawateislami.net

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़्रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

ماٰخذو مراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
✿	قرآنِ پاک	کلام باری تعالیٰ	✿✿✿✿✿
1	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
2	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
3	تفسیر الخازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفّٰی ۷۴۱ھ	المطبعۃ المیمنیۃ مصر ۱۳۱۷ھ
4	التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن الحسین رازی شافعی، متوفّٰی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
5	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ
6	حاشیۃ الصاوی علی الجلالین	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی، متوفّٰی بعد سنۃ ۱۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
7	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیا لاہور

www.dawateislami.net

8	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ، متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
9	سنن ابی داود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفّٰی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
10	سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی، متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
11	سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی، متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
12	الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
13	معالم السنن	ابو سلیمان حمد بن محمد الخطابی، متوفّٰی ۳۸۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
14	الزہد الکبیر	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفّٰی ۴۵۸ھ	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
15	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
16	فردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شہر دار بن شیرویہ دیلمی، متوفّٰی ۵۰۹ھ	دارالفکر بیروت
17	الترغیب والترھیب	حافظ زکی الدین عبد العظیم منذری، متوفّٰی ۶۵۶ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
18	شان حبیب الرحمن	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
19	الحدیقۃ الندیۃ	سیدی عبد الغنی نابلسی حنفی، متوفّٰی ۱۱۴۱ھ	پشاور پاکستان
20	الیواقیت والجواہر	عبد الوہاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی، متوفّٰی ۹۷۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
21	الرسالۃ القشیریۃ	امام ابو القاسم عبد الکریم بن ہوازن قشیری، متوفّٰی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
22	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
23	کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفّٰی ۵۰۵ھ	انتشاراتِ گنجینہ تہران
24	فضائل دعا	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان، متوفّٰی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
25	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
26	بہارِ شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
27	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مفتی محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفّٰی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
28	انوارِ رضا	ضیاء القرآن پبلی کیشنز	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
29	کراماتِ صحابہ	شیخ الحدیث عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
30	سچی حکایات	سلطان الواعظین مولانا ابو النور محمد بشیر صاحب	فرید بک اسٹال مرکز الاولیا لاہور

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	3	क्या वली कबीरा गुनाहों का	
विलायत किसे कहते हैं ?	3	इरतिकाब कर सकता है ?	25
वलियुल्लाह किसे कहते हैं ?	4	विलायत बे इ़ल्म को नहीं मिलती	26
औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام		क्या वली को अपनी	
की पहचान	7	विलायत का इ़ल्म होता है ?	27
औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام		ह़ाफ़िज़े क़ुरआन कितनों की	
के मुख़्तलिफ़ मरातिब	9	शफ़ाअ़त करेगा ?	27
फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी किसी		आ़लिम कितने अफ़राद की	
क़ौम के साथ ख़ास नहीं	11	शफ़ाअ़त करेगा ?	30
करामत की ता'रीफ़	13	मस्जिद में दर्स की इजाज़त न हो तो ?	31
करामत और मो'जिज़े में फ़र्क़	14	बैरूने मुमालिक में म-दनी	
इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है	15	काम मज़्बूत़ करने का त़रीक़ा	32
अ़वाम की ख़ुद साख़्ता बयान कर्दा		अक्सर ज़ैतून मुबारक खाने	
अ़लामात और उन की इस्लाह़	17	की वज्ह	33
मज्ज़ूब किसे कहते हैं ?	19	त़ाक़ अ़दद ज़ैतून इस्ति'माल करने	
सच्चे मज्ज़ूब की पहचान	22	में ह़िक्मत	35
ज़ाहिरी और बात़िनी शरीअ़त		मआख़िज़ो मराजेअ़	37
की ह़क़ीक़ीत	22	फ़ेहरिस्त	39

www.dawateislami.net